I J C R M

International Journal of Contemporary Research In Multidisciplinary

Research Article

ग्रामीण महिलाओं के सामाजिक सशक्तिकरण में सरकारी योजनाओं की भूमिका (भागलपुर जिला के संदर्भ में)

सुलमा कुमारी [1*], प्रो. डॉ. राणा सुनील कुमार सिंह [2]

[1] शोध छात्रा, विश्वविद्यालय समाजशास्त्र विभाग, भूपेंद्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय मधेपुरा, बिहार, भारत

[2] शोध पर्यवेक्षक, विश्वविद्यालय समाजशास्त्र विभाग, भूपेंद्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय मधेपुरा, बिहार, भारत

Corresponding Author: * सुलमा कुमारी

DOI: https://doi.org/ 10.5281/zenodo.19653576

सारांश

यह अध्ययन भागलपुर जिले की ग्रामीण महिलाओं के सामाजिक सशक्तिकरण पर सरकारी योजनाओं के प्रभाव का विश्लेषण करता है। इसमें पाया गया कि उज्ज्वला योजना, स्वयं सहायता समूह और मनरेगा जैसी योजनाओं ने महिलाओं के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाए हैं। इन योजनाओं के माध्यम से महिलाओं की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है, जिससे वे अधिक आत्मनिर्भर बनी हैं और अपने परिवार की आय में योगदान देने लगी हैं। साथ ही, उनके आत्मविश्वास और जागरूकता स्तर में भी वृद्धि हुई है, जिसके कारण वे सामाजिक एवं पारिवारिक निर्णयों में सक्रिय भूमिका निभाने लगी हैं। विशेष रूप से स्वयं सहायता समूहों ने महिलाओं को संगठित कर उन्हें बचत, ऋण सुविधा और छोटे व्यवसाय शुरू करने के अवसर प्रदान किए हैं, जिससे उनकी सामाजिक भागीदारी भी बढ़ी है। अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि योजनाओं का वास्तविक प्रभाव उनकी पहुंच, जानकारी और सही क्रियान्वयन पर निर्भर करता है। हालांकि कई क्षेत्रों में इन योजनाओं के सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं, फिर भी जागरूकता की कमी, प्रशासनिक समस्याएं और संसाधनों की सीमाएं उनके पूर्ण लाभ में बाधा बनती हैं। आंकड़ों से यह निष्कर्ष निकला कि अधिकांश महिलाओं की आय, शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण और सामाजिक स्थिति में सुधार हुआ है तथा परिवार और समाज में उनकी भूमिका अधिक मजबूत हुई है। अतः यह कहा जा सकता है कि सरकारी योजनाएं ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं, जिन्हें और अधिक प्रभावी बनाने के लिए बेहतर क्रियान्वयन और जागरूकता आवश्यक है।

- यह अध्ययन भागलपुर जिले की ग्रामीण महिलाओं के सामाजिक सशक्तिकरण में सरकारी योजनाओं की भूमिका का विश्लेषण करता है।
- उज्ज्वला योजना, स्वयं सहायता समूह और मनरेगा जैसी योजनाओं का महिलाओं के जीवन पर सकारात्मक प्रभाव पाया गया।
- इन योजनाओं से महिलाओं की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ और वे अधिक आत्मनिर्भर बनी हैं।
- महिलाओं का आत्मविश्वास और जागरूकता स्तर बढ़ा है, जिससे वे सामाजिक और पारिवारिक निर्णयों में भाग लेने लगी हैं।
- स्वयं सहायता समूहों ने महिलाओं को संगठित कर बचत, ऋण और छोटे व्यवसाय के अवसर प्रदान किए।
- सरकारी योजनाओं ने महिलाओं की सामाजिक भागीदारी और पहचान को मजबूत किया है।
- अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि योजनाओं का प्रभाव उनकी पहुंच, जागरूकता और सही क्रियान्वयन पर निर्भर करता है।
- कई क्षेत्रों में सकारात्मक परिणाम मिले, लेकिन जागरूकता की कमी और प्रशासनिक बाधाएं अभी भी समस्या हैं।
- महिलाओं की आय, शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण और सामाजिक स्थिति में सुधार देखा गया है।
- निष्कर्ष रूप में, सरकारी योजनाएं ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं, लेकिन इन्हें और प्रभावी बनाने के लिए बेहतर क्रियान्वयन और जागरूकता आवश्यक है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 05-03-2026
- **Accepted:** 15-04-2026
- **Published:** 19-04-2026
- **IJCRM:**5(2); 2026: 687-695
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

सुलमा कुमारी, प्रो. डॉ. राणा सुनील कुमार सिंह. ग्रामीण महिलाओं के सामाजिक सशक्तिकरण में सरकारी योजनाओं की भूमिका (भागलपुर जिला के संदर्भ में). Int J Contemp Res Multidiscip. 2026;5(2): 687-695.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

मूल शब्द: ग्रामीण महिलाएं, सामाजिक सशक्तिकरण, सरकारी योजनाएं, स्वयं सहायता समूह, राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन, उज्ज्वला योजना, आर्थिक सशक्तिकरण, सामाजिक परिवर्तन, महिला भागीदारी, आत्मनिर्भरता, लैंगिक समानता, भागलपुर जिला

© 2026 सुलमा कुमारी, प्रो. डॉ. राणा सुनील कुमार सिंह. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

1. प्रस्तावना

ग्रामीण भारत में महिलाओं की भूमिका पारंपरिक रूप से परिवार और समाज के विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। वे न केवल घरेलू कार्यों का संचालन करती हैं, बल्कि कृषि, पशुपालन तथा अन्य आर्थिक गतिविधियों में भी सक्रिय योगदान देती हैं। इसके बावजूद, लंबे समय तक उन्हें सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक दृष्टि से पिछड़ा हुआ माना गया। समय के साथ सरकार द्वारा विभिन्न योजनाओं और नीतियों के माध्यम से महिलाओं के सशक्तिकरण की दिशा में प्रयास किए गए हैं, जिनका उद्देश्य महिलाओं को आत्मनिर्भर, जागरूक और निर्णय लेने में सक्षम बनाना है।

विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, सरकारी योजनाएँ महिलाओं के जीवन स्तर में सुधार लाने, उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त बनाने और सामाजिक पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। बिहार के भागलपुर जिले में भी ऐसी कई योजनाएँ संचालित हैं, जिनके माध्यम से महिलाओं के सामाजिक सशक्तिकरण की प्रक्रिया को गति मिली है। यह अध्ययन इन्हीं योजनाओं के प्रभाव और उनकी भूमिका का विश्लेषण करता है।

2. साहित्य समीक्षा

साहित्य समीक्षा किसी भी शोध का महत्वपूर्ण भाग होता है, क्योंकि यह पूर्व में किए गए अध्ययनों, सिद्धांतों और निष्कर्षों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इससे शोधकर्ता को विषय की गहराई से समझ मिलती है तथा शोध अंतर की पहचान करने में सहायता मिलती है। प्रस्तुत अध्ययन में ग्रामीण महिलाओं के सामाजिक सशक्तिकरण में सरकारी योजनाओं की भूमिका को समझने के लिए विभिन्न शोध कार्यों, लेखों और रिपोर्टों का अध्ययन किया गया है।

2.1 ग्रामीण महिलाओं की स्थिति पर पूर्व अध्ययन

कई शोधों में यह पाया गया है कि ग्रामीण महिलाओं की स्थिति अभी भी चुनौतीपूर्ण है।

अध्ययनों के अनुसार, ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं को शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के अवसरों की कमी का सामना करना पड़ता है। सामाजिक रूढ़ियाँ और पितृसत्तात्मक व्यवस्था उनके विकास में बाधा बनती हैं।

कुछ शोधों ने यह भी दर्शाया है कि स्वयं सहायता समूह (SHG) के माध्यम से महिलाओं की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है, जिससे उनके आत्मविश्वास और सामाजिक भागीदारी में वृद्धि हुई है।

हालाँकि, कई क्षेत्रों में अभी भी महिलाओं को निर्णय लेने में सीमित भूमिका मिलती है और वे आर्थिक रूप से निर्भर रहती हैं।

2.2 सरकारी योजनाओं पर पूर्व शोध

सरकारी योजनाओं पर किए गए विभिन्न अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि इन योजनाओं ने महिलाओं के सशक्तिकरण में सकारात्मक योगदान दिया है।

राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (NRLM) और स्वयं सहायता समूहों पर आधारित शोधों में पाया गया है कि इन योजनाओं ने महिलाओं की आय बढ़ाने और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने में मदद की है।

उज्ज्वला योजना के तहत स्वच्छ ईंधन की उपलब्धता ने महिलाओं के स्वास्थ्य और जीवन स्तर में सुधार किया है।

इसी प्रकार, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ जैसी योजनाओं ने शिक्षा और लैंगिक समानता को बढ़ावा दिया है।

फिर भी, कई अध्ययनों में यह भी पाया गया है कि योजनाओं का लाभ सभी महिलाओं तक समान रूप से नहीं पहुँच पाता, और क्रियान्वयन में क्षेत्रीय असमानताएँ मौजूद हैं।

2.3 शोध अंतर (Research Gap)

उपलब्ध साहित्य से यह स्पष्ट होता है कि महिला सशक्तिकरण और सरकारी योजनाओं पर काफी शोध किया गया है, लेकिन कुछ महत्वपूर्ण अंतर अभी भी मौजूद हैं:

- अधिकांश अध्ययन व्यापक स्तर (राष्ट्रीय या राज्य स्तर) पर केंद्रित हैं, जबकि जिला स्तर पर विश्लेषण सीमित है।
- भागलपुर जिले के संदर्भ में विशेष रूप से ग्रामीण महिलाओं पर केंद्रित अध्ययन कम उपलब्ध हैं।
- सामाजिक सशक्तिकरण के आयामों पर योजनाओं के प्रभाव का समग्र विश्लेषण कम किया गया है।
- योजनाओं के वास्तविक क्रियान्वयन और जमीनी स्तर की चुनौतियों पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया गया है।

इन्हीं अंतरालों को ध्यान में रखते हुए यह अध्ययन भागलपुर जिले में सरकारी योजनाओं की भूमिका का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

3 अध्ययन के उद्देश्य

इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

1. ग्रामीण महिलाओं के सामाजिक सशक्तिकरण की स्थिति का अध्ययन करना।
2. सरकारी योजनाओं की भूमिका का विश्लेषण करना।
3. भागलपुर जिले में योजनाओं के क्रियान्वयन की स्थिति का मूल्यांकन करना।
4. महिलाओं के जीवन में आए सामाजिक परिवर्तनों का अध्ययन करना।
5. सशक्तिकरण में आने वाली बाधाओं की पहचान करना।

4 परिकल्पना

शून्य परिकल्पना

1. ग्रामीण महिलाओं के सामाजिक सशक्तिकरण की वर्तमान स्थिति पर सरकारी योजनाओं का कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं है।
2. सरकारी योजनाएँ ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण में कोई महत्वपूर्ण भूमिका नहीं निभाती हैं।
3. भागलपुर जिले में सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन की स्थिति महिलाओं के सशक्तिकरण को प्रभावित नहीं करती है।
4. सरकारी योजनाओं के कारण महिलाओं के जीवन में कोई महत्वपूर्ण सामाजिक परिवर्तन नहीं आया है।
5. सशक्तिकरण की प्रक्रिया में आने वाली बाधाओं का सरकारी योजनाओं की प्रभावशीलता पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं है।

वैकल्पिक परिकल्पना

1. ग्रामीण महिलाओं के सामाजिक सशक्तिकरण की वर्तमान स्थिति पर सरकारी योजनाओं का महत्वपूर्ण प्रभाव है।
2. सरकारी योजनाएँ ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

© 2026 सुलमा कुमारी, प्रो. डॉ. राणा सुनील कुमार सिंह. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

3. भागलपुर जिले में सरकारी योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन महिलाओं के सशक्तिकरण को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।
4. सरकारी योजनाओं के कारण महिलाओं के जीवन में महत्वपूर्ण सामाजिक परिवर्तन आया है।
5. सशक्तिकरण की प्रक्रिया में आने वाली बाधाएँ सरकारी योजनाओं की प्रभावशीलता को प्रभावित करती हैं।

5 सैद्धांतिक ढांचा

किसी भी शोध को वैज्ञानिक और व्यवस्थित आधार देने के लिए सैद्धांतिक ढांचा अत्यंत आवश्यक होता है। यह शोध के प्रमुख अवधारणाओं, सिद्धांतों और दृष्टिकोणों को स्पष्ट करता है, जिनके आधार पर अध्ययन का विश्लेषण किया जाता है।

प्रस्तुत अध्ययन में ग्रामीण महिलाओं के सामाजिक सशक्तिकरण को समझने के लिए सशक्तिकरण सिद्धांत, सामाजिक परिवर्तन के सिद्धांत तथा लैंगिक समानता के दृष्टिकोण को आधार बनाया गया है।

5.1 सशक्तिकरण सिद्धांत

सशक्तिकरण सिद्धांत के अनुसार, सशक्तिकरण एक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति या समूह अपने जीवन पर नियंत्रण स्थापित करता है और अपने निर्णय स्वयं लेने में सक्षम बनता है।

नायला कबीर के अनुसार, सशक्तिकरण तीन प्रमुख तत्वों पर आधारित होता हैरू

- **संसाधन-** जैसे शिक्षा, आर्थिक साधन, जानकारी
- **एजेंसी** -निर्णय लेने की क्षमता और स्वतंत्रता
- **उपलब्धियाँ** -जीवन में प्राप्त परिणाम और सुधार

इसी प्रकार, अमर्त्य सेन का “क्षमता दृष्टिकोण” यह बताता है कि सशक्तिकरण का संबंध व्यक्ति की क्षमताओं और अवसरों के विस्तार से है।

ग्रामीण महिलाओं के संदर्भ में, सरकारी योजनाएँ उन्हें संसाधन और अवसर प्रदान करती हैं, जिससे उनकी एजेंसी बढ़ती है और वे सामाजिक रूप से सशक्त होती हैं। यह सिद्धांत इस अध्ययन के लिए एक आधार प्रदान करता है, जिससे यह समझा जा सके कि योजनाएँ किस प्रकार महिलाओं के जीवन में परिवर्तन लाती हैं।

5.2 सामाजिक परिवर्तन के सिद्धांत

सामाजिक परिवर्तन के सिद्धांत समाज में समय के साथ होने वाले परिवर्तनों को समझने में सहायक होते हैं।

आधुनिकीकरण सिद्धांत (Modernization Theory) के अनुसार, विकास और प्रगति के साथ समाज में नई सोच, तकनीक और संस्थाएँ विकसित होती हैं, जिससे सामाजिक संरचना में बदलाव आता है।

इसी प्रकार, संरचनात्मक-कार्यात्मक दृष्टिकोण (Structural & Functionalism) यह मानता है कि समाज के विभिन्न अंग एक-दूसरे से जुड़े होते हैं और किसी एक क्षेत्र में परिवर्तन पूरे समाज को प्रभावित करता है। ग्रामीण क्षेत्रों में सरकारी योजनाएँ सामाजिक परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण माध्यम बनती हैं। ये योजनाएँ महिलाओं को शिक्षा, रोजगार और सामाजिक भागीदारी के अवसर प्रदान करती हैं, जिससे पारंपरिक सामाजिक संरचनाओं में बदलाव आता है। इस अध्ययन में यह देखा जाएगा कि भागलपुर जिले में इन योजनाओं के माध्यम से किस प्रकार सामाजिक परिवर्तन हो रहा है।

5.3 लैंगिक समानता का दृष्टिकोण (Gender Equality Perspective)

लैंगिक समानता का दृष्टिकोण यह मानता है कि समाज में पुरुष और महिला दोनों को समान अधिकार, अवसर और सम्मान मिलना चाहिए।

यह दृष्टिकोण पितृसत्तात्मक संरचना (Patriarchy) की आलोचना करता है, जिसमें महिलाओं को निम्न स्थिति में रखा जाता है।

संयुक्त राष्ट्र और अन्य अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं ने भी लैंगिक समानता को सतत विकास का एक महत्वपूर्ण लक्ष्य माना है।

ग्रामीण क्षेत्रों में, लैंगिक असमानता महिलाओं के सशक्तिकरण में एक बड़ी बाधा है। सरकारी योजनाएँ इस असमानता को कम करने और महिलाओं को समान अवसर प्रदान करने का प्रयास करती हैं।

इस अध्ययन में लैंगिक समानता के दृष्टिकोण के माध्यम से यह विश्लेषण किया जाएगा कि योजनाएँ किस हद तक महिलाओं की सामाजिक स्थिति को सुधारने में सफल रही हैं।

5.4 महिला सशक्तिकरण की अवधारणा (Concept of Women Empowerment)

महिला सशक्तिकरण का अर्थ है महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और शैक्षिक रूप से सक्षम बनाना, ताकि वे अपने जीवन से संबंधित निर्णय स्वतंत्र रूप से ले सकें।

विभिन्न विद्वानों के अनुसार, सशक्तिकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से महिलाएँ अपने अधिकारों, संसाधनों और अवसरों तक पहुँच प्राप्त करती हैं। यह केवल आर्थिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं है, बल्कि आत्मविश्वास, आत्मसम्मान और सामाजिक पहचान से भी जुड़ा हुआ है।

अमर्त्य सेन के “क्षमता दृष्टिकोण” के अनुसार, सशक्तिकरण का संबंध व्यक्ति की क्षमताओं और विकल्पों के विस्तार से है। इसी प्रकार, नायला कबीर ने सशक्तिकरण को संसाधन, एजेंसी और उपलब्धियों के रूप में परिभाषित किया है।

इस प्रकार, महिला सशक्तिकरण एक बहुआयामी अवधारणा है, जिसमें सामाजिक स्वतंत्रता और समानता प्रमुख तत्व हैं।

6. अनुसंधान पद्धति (RESEARCH METHODOLOGY)

यह अध्याय अध्ययन की रूपरेखा, डेटा संग्रहण की प्रक्रिया, सैंपलिंग विधि तथा विश्लेषण तकनीकों का वर्णन करता है। अनुसंधान पद्धति यह सुनिश्चित करती है कि अध्ययन वैज्ञानिक, व्यवस्थित और विश्वसनीय हो।

6.1 अनुसंधान डिजाइन

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक (Descriptive) और विश्लेषणात्मक (Analytical) अनुसंधान डिजाइन पर आधारित है।

वर्णनात्मक अनुसंधान के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं की वर्तमान सामाजिक स्थिति और सरकारी योजनाओं की भूमिका का विवरण प्रस्तुत किया गया है, जबकि विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण से इन योजनाओं के प्रभाव का मूल्यांकन किया गया है।

इस अध्ययन में मिश्रित पद्धति (Mixed Method) का उपयोग किया गया है, जिसमें गुणात्मक (Qualitative) और मात्रात्मक (Quantitative) दोनों प्रकार के डेटा को शामिल किया गया है, ताकि अधिक व्यापक और संतुलित निष्कर्ष प्राप्त किए जा सकें।

© 2026 सुलमा कुमारी, प्रो. डॉ. राणा सुनील कुमार सिंह. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

6.2 अध्ययन क्षेत्र- भागलपुर जिला का परिचय

यह अध्ययन बिहार राज्य के भागलपुर जिले में किया गया है। भागलपुर एक प्रमुख कृषि आधारित जिला है, जहाँ अधिकांश जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है।

यह जिला सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से विविधताओं से भरा हुआ है, जहाँ महिलाओं की स्थिति परंपरागत मान्यताओं और आधुनिक विकास के बीच संतुलन बनाती हुई दिखाई देती है।

भागलपुर में कई सरकारी योजनाएँ जैसे स्वयं सहायता समूह, राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन आदि सक्रिय रूप से संचालित हो रही हैं, जो महिलाओं के सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

इस जिले का चयन इसलिए किया गया है क्योंकि यहाँ ग्रामीण महिलाओं की स्थिति और सरकारी योजनाओं का प्रभाव अध्ययन के लिए उपयुक्त परिप्रेक्ष्य प्रदान करता है।

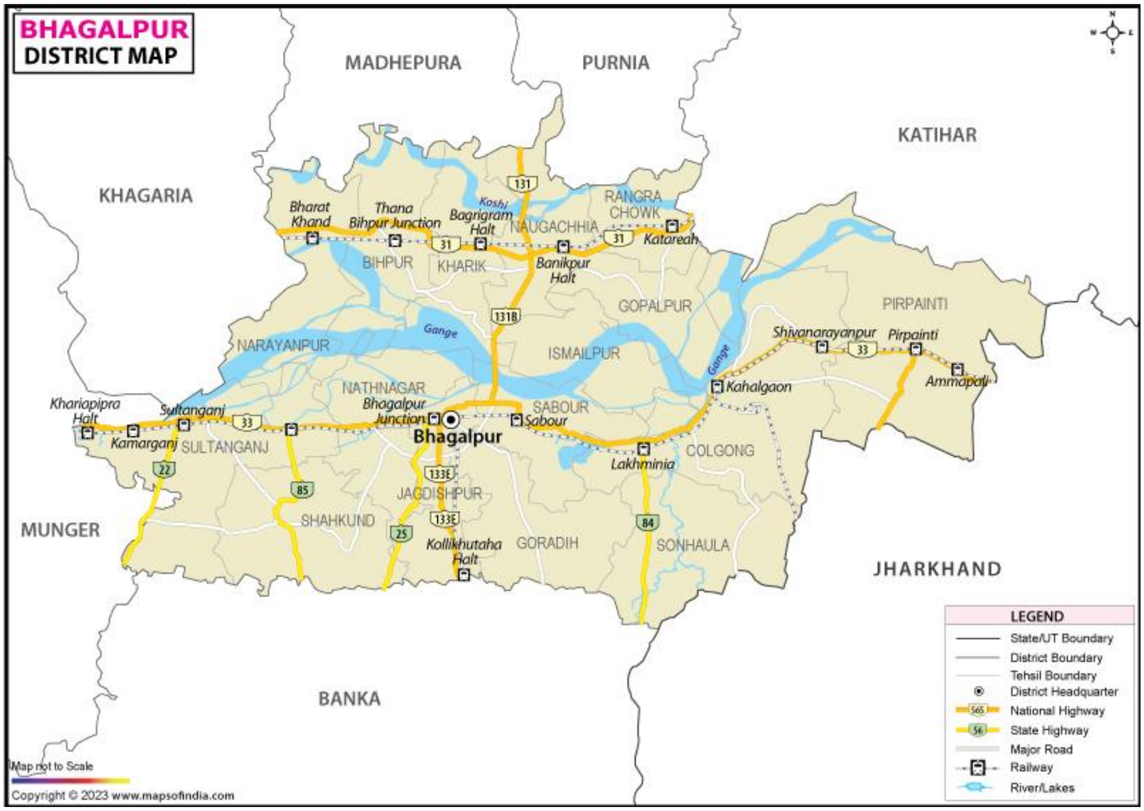

6.3 सैंपलिंग तकनीक और सैंपल साइज (Sampling Technique and Sample Size)

इस अध्ययन में उद्देश्यपूर्ण सैंपलिंग तकनीक का उपयोग किया गया है। इस तकनीक के अंतर्गत उन महिलाओं का चयन किया गया है जो विभिन्न सरकारी योजनाओं से जुड़ी हुई हैं, जैसे स्वयं सहायता समूहों की सदस्य या अन्य लाभार्थी।

सैंपल साइज:

इस अध्ययन के लिए लगभग 130 ग्रामीण महिलाओं का चयन किया गया है, ताकि विभिन्न सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि को शामिल किया जा सके।इसके अतिरिक्त, कुछ स्थानीय अधिकारियों और योजना से जुड़े कार्यकर्ताओं को भी शामिल किया गया है, जिससे अधिक सटीक और विश्वसनीय जानकारी प्राप्त हो सके।

6.4 डेटा संग्रहण के स्रोत

इस अध्ययन में डेटा संग्रहण के लिए प्राथमिक और द्वितीयक दोनों स्रोतों का उपयोग किया गया है।

(ख) प्राथमिक डेटा

प्राथमिक डेटा सीधे उत्तरदाताओं से एकत्र किया गया है। इसके लिए निम्नलिखित विधियों का उपयोग किया गया-

साक्षात्कार रू ग्रामीण महिलाओं और संबंधित अधिकारियों से आमने-सामने बातचीत के माध्यम से जानकारी प्राप्त की गई।

(ख) द्वितीयक डेटा

द्वितीयक डेटा विभिन्न स्रोतों से प्राप्त किया गया, जैसे-

- सरकारी रिपोर्ट और दस्तावेज
- शोध पत्र
- पुस्तकें और पत्रिकाएँ
- इंटरनेट स्रोत और आधिकारिक वेबसाइट

इन स्रोतों से प्राप्त जानकारी ने अध्ययन को सैद्धांतिक और तथ्यात्मक आधार प्रदान किया।

6.5 डेटा विश्लेषण की विधि

संग्रहित डेटा का विश्लेषण गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों विधियों से किया गया है। मात्रात्मक विश्लेषण साक्षात्कार अनुसूची से प्राप्त डेटा को प्रतिशत और सरल सांख्यिकीय विधियों के माध्यम से प्रस्तुत किया

© 2026 सुलमा कुमारी, प्रो. डॉ. राणा सुनील कुमार सिंह. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

गया है। गुणात्मक विश्लेषणरू साक्षात्कार और अवलोकन से प्राप्त जानकारी का विषयवस्तु विश्लेषण किया गया है, जिससे महिलाओं के अनुभवों और दृष्टिकोण को समझा जा सके।
इस प्रकार, दोनों प्रकार के विश्लेषण से अध्ययन के निष्कर्ष अधिक सटीक और विश्वसनीय बने हैं।

6.6 अध्ययन की सीमाएँ

प्रत्येक शोध की कुछ सीमाएँ होती हैं, जो उसके परिणामों को प्रभावित कर सकती हैं। **इस अध्ययन की प्रमुख सीमाएँ निम्नलिखित हैं:**

1. अध्ययन केवल भागलपुर जिले तक सीमित है, इसलिए इसके निष्कर्ष अन्य क्षेत्रों पर पूर्णतः लागू नहीं किए जा सकते।
2. सैंपल साइज सीमित होने के कारण सभी वर्गों का पूर्ण प्रतिनिधित्व संभव नहीं हो पाया।
3. कुछ उत्तरदाताओं द्वारा दी गई जानकारी में व्यक्तिगत पक्षपात हो सकता है।
4. समय और संसाधनों की कमी के कारण व्यापक क्षेत्र को कवर करना संभव नहीं था।

7. सरकारी योजनाओं का अवलोकन

ग्रामीण महिलाओं के सामाजिक सशक्तिकरण के लिए सरकार द्वारा विभिन्न योजनाएँ संचालित की जा रही हैं। इन योजनाओं का उद्देश्य महिलाओं को आर्थिक, सामाजिक और शैक्षिक रूप से सशक्त बनाना है, ताकि वे आत्मनिर्भर बन सकें और समाज में उनकी भागीदारी बढ़े।

7.1 महिला सशक्तिकरण से संबंधित प्रमुख योजनाएँ

(क) स्वयं सहायता समूह (Self Help Groups – SHG)

स्वयं सहायता समूह महिलाओं के छोटे-छोटे समूह होते हैं, जिनमें वे नियमित रूप से बचत करती हैं और जरूरत पड़ने पर ऋण प्राप्त करती हैं।
यह योजना महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के साथ-साथ सामाजिक रूप से भी जागरूक बनाती है। ैभ्ळ के माध्यम से महिलाएँ सामूहिक निर्णय लेना सीखती हैं और आत्मविश्वास में वृद्धि होती है।

(ख) राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (NRLM)

राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन का उद्देश्य ग्रामीण गरीब महिलाओं को स्वरोजगार और आजीविका के अवसर प्रदान करना है।
इस योजना के अंतर्गत महिलाओं को कौशल प्रशिक्षण, वित्तीय सहायता और उद्यमिता विकास के अवसर दिए जाते हैं। छत्स्ड के माध्यम से महिलाओं की आय में वृद्धि और सामाजिक स्थिति में सुधार देखा गया है।

(ग) उज्ज्वला योजना (Pradhan Mantri Ujjwala Yojana)

उज्ज्वला योजना के तहत गरीब परिवारों की महिलाओं को मुफ्त एलपीजी कनेक्शन प्रदान किया जाता है। इससे महिलाओं को धुएँ से होने वाली स्वास्थ्य समस्याओं से राहत मिलती है और उनका जीवन स्तर बेहतर होता है। यह योजना महिलाओं के स्वास्थ्य और गरिमा दोनों को बढ़ावा देती है।

(घ) बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ योजना

इस योजना का उद्देश्य बालिकाओं के प्रति समाज में सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना और उनकी शिक्षा को बढ़ावा देना है।
यह योजना लैंगिक समानता को प्रोत्साहित करती है और बालिकाओं के अधिकारों की रक्षा करती है, जिससे भविष्य में महिलाओं का सशक्तिकरण सुनिश्चित होता है।

(ङ) अन्य राज्यध्स्थानीय योजनाएँ

राज्य सरकार और स्थानीय निकायों द्वारा भी कई योजनाएँ चलाई जाती हैं, जैसे-

1. जीविका योजना (बिहार)
2. महिला विकास कार्यक्रम
3. कौशल विकास योजनाएँ

ये योजनाएँ स्थानीय स्तर पर महिलाओं को रोजगार, प्रशिक्षण और वित्तीय सहायता प्रदान करती हैं।

7.2 योजनाओं के उद्देश्य और क्रियान्वयन

सरकारी योजनाओं के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

1. महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाना
2. सामाजिक जागरूकता और भागीदारी बढ़ाना
3. स्वास्थ्य और शिक्षा के स्तर में सुधार करना
4. लैंगिक समानता को बढ़ावा देना

क्रियान्वयन की प्रक्रिया

इन योजनाओं का क्रियान्वयन केंद्र और राज्य सरकारों के सहयोग से स्थानीय प्रशासन, पंचायतों और स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से किया जाता है।
हालाँकि, क्रियान्वयन में कई बार जागरूकता की कमी, संसाधनों की कमी और प्रशासनिक बाधाएँ देखने को मिलती हैं, जो योजनाओं की प्रभावशीलता को प्रभावित करती हैं।

8. भागलपुर जिले में योजनाओं का क्रियान्वयन

भागलपुर जिले में विभिन्न सरकारी योजनाओं का संचालन ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए किया जा रहा है। इन योजनाओं ने महिलाओं के जीवन में कई सकारात्मक बदलाव लाए हैं, लेकिन कुछ चुनौतियाँ अभी भी मौजूद हैं।

8.1 स्थानीय स्तर पर योजनाओं की स्थिति

भागलपुर जिले में स्वयं सहायता समूहों और जीविका योजना के माध्यम से बड़ी संख्या में महिलाएँ जुड़ी हुई हैं।
छत्स्ड के अंतर्गत महिलाओं को प्रशिक्षण और वित्तीय सहायता प्रदान की जा रही है। उज्ज्वला योजना के तहत अधिकांश ग्रामीण परिवारों को गैस कनेक्शन मिल चुका है।
हालाँकि, कुछ दूरस्थ क्षेत्रों में योजनाओं का लाभ पूरी तरह से नहीं पहुँच पाया है, जहाँ जागरूकता और संसाधनों की कमी एक बड़ी समस्या है।

8.2 महिलाओं की भागीदारी

भागलपुर जिले में महिलाओं की भागीदारी में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है। महिलाएँ स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से आर्थिक गतिविधियों में शामिल हो रही हैं और अपने परिवार के निर्णयों में भी

© 2026 सुलमा कुमारी, प्रो. डॉ. राणा सुनील कुमार सिंह. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

सक्रिय भूमिका निभा रही हैं। इसके अतिरिक्त, कई महिलाएँ सामाजिक कार्यक्रमों और पंचायत स्तर की गतिविधियों में भी भाग ले रही हैं, जिससे उनका आत्मविश्वास और सामाजिक पहचान बढ़ी है।

8.3 प्रशासनिक सहयोग और चुनौतियाँ

स्थानीय प्रशासन और सरकारी अधिकारियों द्वारा योजनाओं के क्रियान्वयन में सहयोग दिया जा रहा है, जैसे प्रशिक्षण कार्यक्रम और वित्तीय सहायता।

फिर भी, कुछ प्रमुख चुनौतियाँ सामने आती हैं:

1. योजनाओं की जानकारी का अभाव
2. नौकरशाही प्रक्रियाओं में देरी
3. संसाधनों की कमी
4. सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाएँ
5. कुछ क्षेत्रों में निगरानी और मूल्यांकन की कमी

इन चुनौतियों के बावजूद, योजनाओं ने महिलाओं के सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, और उचित सुधार के साथ इनकी प्रभावशीलता और बढ़ाई जा सकती है।

9. डेटा विश्लेषण एवं निष्कर्ष

यह विश्लेषण 130 ग्रामीण महिलाओं से प्राप्त डेटा पर आधारित है, जिन्हें विभिन्न सरकारी योजनाओं (SHG NRLM, उज्ज्वला आदि) से जोड़ा गया था।

9.1 सामाजिक सशक्तिकरण पर प्रभाव

संकेतक	हाँ	नहीं
योजनाओं की जानकारी बढ़ी	92	38
सामाजिक गतिविधियों में भागीदारी	85	45
आत्मविश्वास में वृद्धि	98	32

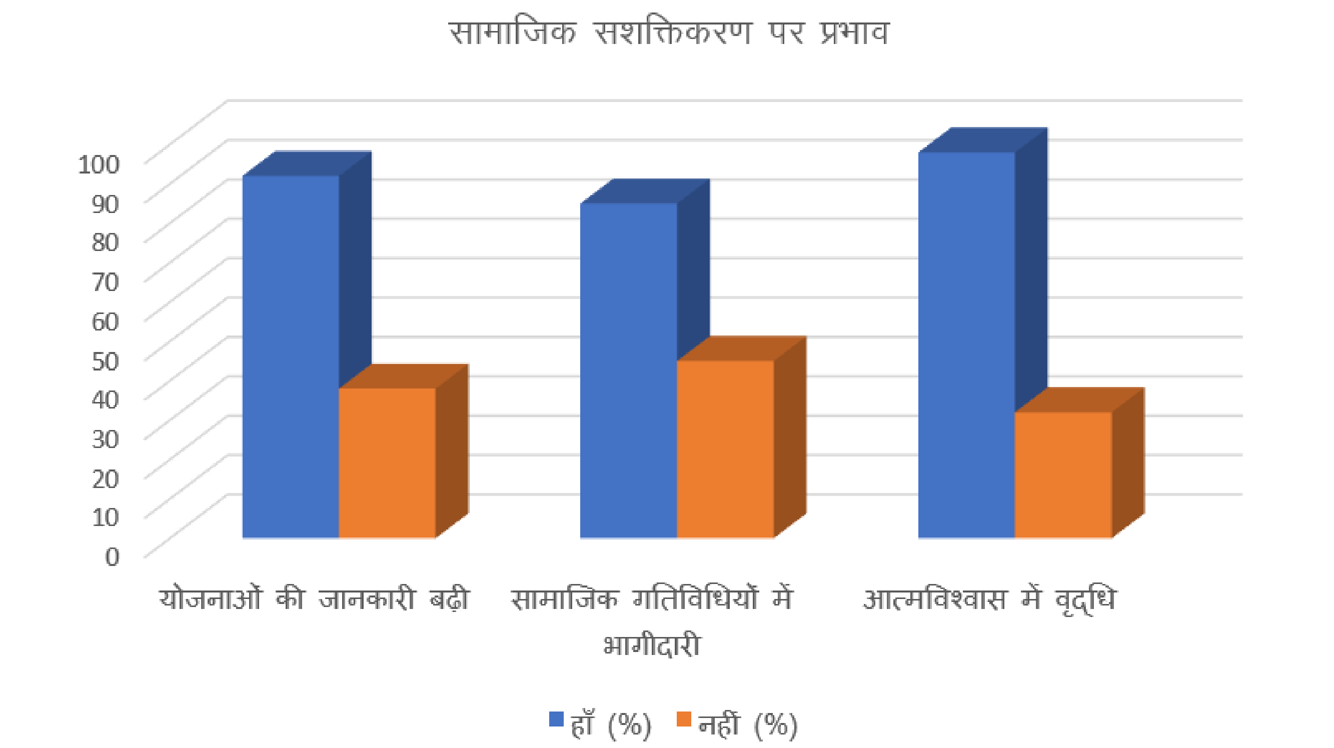

निष्कर्ष: अधिकांश महिलाओं (70%) में जागरूकता और आत्मविश्वास में वृद्धि देखी गई। SHG समूहों ने सामाजिक भागीदारी बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

संकेतक	हाँ	नहीं
आय में वृद्धि	82	48
स्वरोजगार शुरू किया	60	70
बच्चों की शिक्षा में सुधार	95	35

© 2026 सुलमा कुमारी, प्रो. डॉ. राणा सुनील कुमार सिंह. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

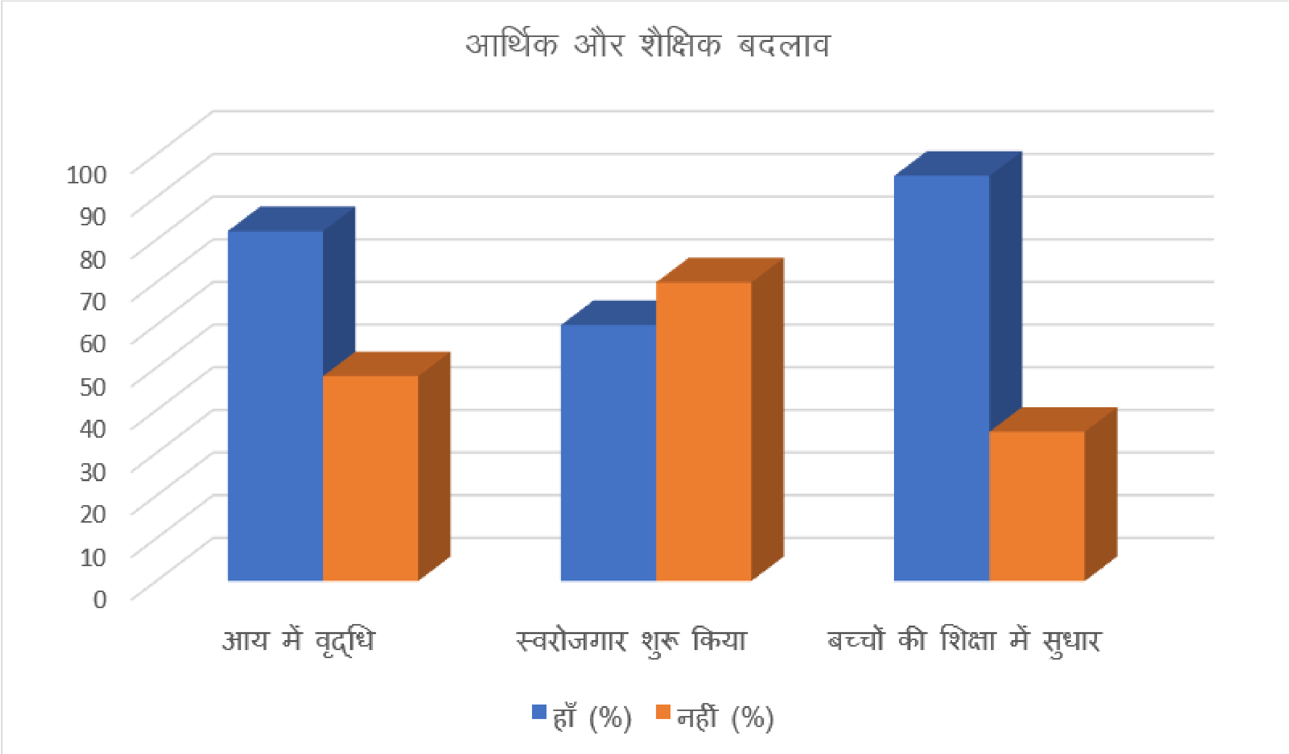

निष्कर्ष

- लगभग 63: महिलाओं की आय में वृद्धि हुई
- 46: महिलाओं ने छोटे व्यवसाय शुरू किए
- शिक्षा के प्रति जागरूकता में स्पष्ट सुधार देखा गया

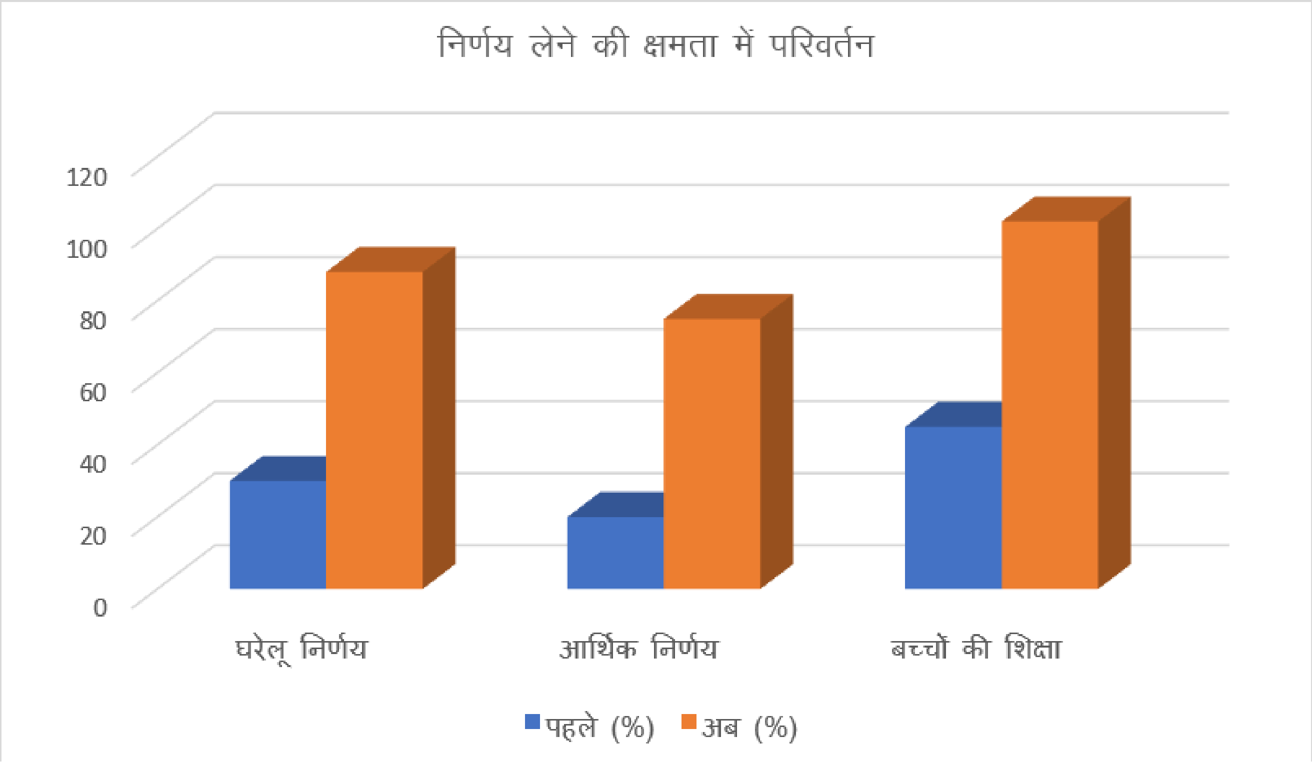

निष्कर्ष: महिलाओं की निर्णय लेने की भूमिका में उल्लेखनीय वृद्धि हुई, विशेषकर शिक्षा और घरेलू मामलों में।

© 2026 सुलमा कुमारी, प्रो. डॉ. राणा सुनील कुमार सिंह. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

9.4 सामाजिक स्थिति में सुधार

संकेतक	हाँ	नहीं
परिवार में सम्मान बढ़ा	90	40
समाज में पहचान बनी	78	52
पंचायत/समूह में भागीदारी	65	65

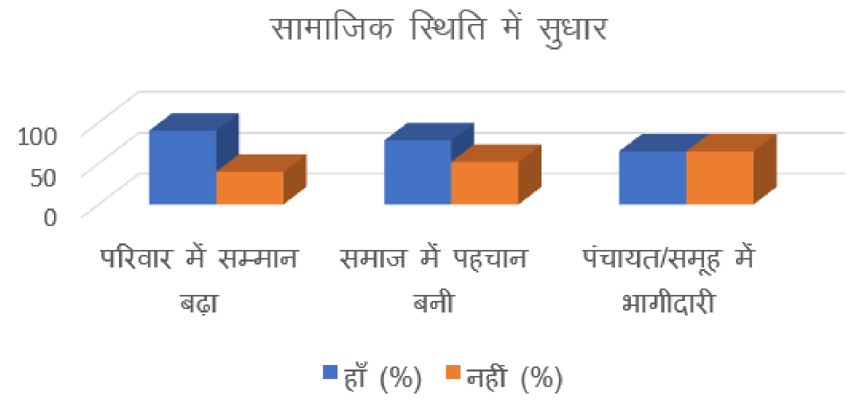

निष्कर्ष

लगभग 60-70: महिलाओं ने सामाजिक स्थिति में सुधार महसूस किया, हालांकि पंचायत स्तर पर भागीदारी अभी मध्यम स्तर पर है।

10. चर्चा

10.1 प्रमुख निष्कर्षों की व्याख्या

डेटा से स्पष्ट है कि:

सरकारी योजनाओं का सामाजिक और आर्थिक दोनों स्तरों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है

SHG और NRLM सबसे अधिक प्रभावी योजनाएँ साबित हुईं

जागरूकता और आत्मविश्वास सशक्तिकरण के प्रमुख कारक बने

फिर भी, कुछ महिलाएँ अभी भी योजनाओं से पूरी तरह लाभान्वित नहीं हो पाई हैं, जिसका मुख्य कारण जानकारी और संसाधनों की कमी है।

10.2 अन्य अध्ययनों से तुलना

यह परिणाम अन्य शोधों से मेल खाते हैं, जहा SHG ने महिलाओं की आय और आत्मनिर्भरता बढ़ाई

छत्स्ड पर किए गए अध्ययनों में भी समान रूप से सामाजिक भागीदारी में वृद्धि देखी गई

कुछ शोधों की तरह यहाँ भी implementation gap (क्रियान्वयन की कमी) सामने आया

11. निष्कर्ष एवं सुझाव

11.1 निष्कर्ष

अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ किरू

- सरकारी योजनाएँ ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण में प्रभावी हैं
- महिलाओं की आर्थिक स्थिति, सामाजिक पहचान और निर्णय क्षमता में सुधार हुआ है
- ैभ्ळ और छत्स्ड सबसे अधिक प्रभाव डालने वाली योजनाएँ हैं

11.2 नीति संबंधी सुझाव

- गाँव स्तर पर जागरूकता अभियान बढ़ाए जाएँ
- SHG को और मजबूत किया जाए
- महिलाओं के लिए skill training programs बढ़ाए जाएँ
- पंचायत स्तर पर महिलाओं की भागीदारी बढ़ाई जाए
- योजनाओं की monitoring system मजबूत किया जाए

11.3 भविष्य के शोध के लिए सुझाव

- अन्य जिलों के साथ comparative study
- महिलाओं के राजनीतिक सशक्तिकरण पर शोध
- SC/ST महिलाओं पर विशेष अध्ययन

संदर्भ सूची

1. Kabeer, N. (1999). Resources, Agency, Achievements: Reflections on the Measurement of Women's Empowerment. Oxford University Press.
2. Sen, A. (1999). Development as Freedom. Oxford University Press.
3. Desai, N. & Krishnaraj, M. (2004). Women and Society in India. Ajanta Publications.
4. Sharma, K. (2012). Women Empowerment and Rural Development. Deep & Deep Publications.
5. Singh, K. (2016). Women and Development: Issues and Challenges. Rawat Publications.
6. Verma, G., Manju, et al. (2022). Impact of Self-Help Group on Women Empowerment in India.
7. https://www.researchgate.net/publication/367168084_IMPACT_OF_SELF_HELP_GROUP_ON_WOMEN_EMPOWERMENT_IN_INDIA
8. Luqman, S. (2025). A Study of the National Rural Livelihood Mission (NRLM) for Women.
9. https://www.researchgate.net/publication/391653449_A_STUDY_OF_THE_NATIONAL_RURAL_LIVELIHOOD_

© 2026 सुलमा कुमारी, प्रो. डॉ. राणा सुनील कुमार सिंह. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

MISSION_NRLM_FOR_WOMEN_ITS_IMPACT_ON_SOCIAL_POLITICAL_AND_ECONOMIC_SPHERES
10. Giribabu, M. (2022). National Rural Livelihood Mission and Women Empowerment.
11. https://indianjournalofeconomicsandresearch.com/index.php/aijer/article/view/168222
12. Kumar, N. (2021). The Power of Collective: SHGs and Women Empowerment.
13. https://www.sciencedirect.com/science/article/pii/S0305750X21001947
14. Chaitra, C. N. (2024). Impact of SHGs on Women's Decision Making.
15. https://www.ijmds.in/index.php/ijmds/article/view/780
16. NRLM Impact Study (2024).
17. https://multiresearchjournal.theviews.in/counter/d/3-4-56/3-4-56.1.pdf
18. SHG and Poverty Alleviation Study (2024).
19. https://www.researchgate.net/publication/394046638_IMPACT_OF_SELF-HELP_GROUP_WOMEN_EMPOWERMENT_POVERTY_ELIVATION_INTRODUCTIONS
20. DAY-NRLM Empowerment Study (2024).
21. https://www.questjournals.org/jrhss/papers/vol12-issue3/1203139144.pdf
22. Ministry of Rural Development, Government of India. Deendayal Antyodaya Yojana – NRLM.
23. https://aajeevika.gov.in
24. Government of India. Pradhan Mantri Ujjwala Yojana (PMUY).
25. https://www.pmuy.gov.in
26. Ministry of Women and Child Development. Beti Bachao Beti Padhao Scheme.
27. https://wcd.nic.in
28. NABARD. SHG-Bank Linkage Programme Reports.
29. 3ie (2020). Empowering Women through Self Help Groups.
30. https://www.3ieimpact.org/blogs/empowering-women-through-self-help-groups-evidence-effectiveness-questions-scale
31. IJRAR (2024). Impact of SHGs on Women Empowerment.
32. https://journals.stmjournals.com/rrjoast/article%3D2025/view%3D209857
33. IJISRT (2023). Role of NRLM in Women Empowerment.
34. https://ijisrt.com/assets/upload/files/IJISRT23MAY965_%281%29.pdf

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-Commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) license. This license permits sharing and redistribution of the article in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted under this license.

About the corresponding author

सुलमा कुमारी भूपेंद्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा (बिहार) के समाजशास्त्र विभाग में शोध छात्रा हैं। उनका शैक्षणिक कार्य सामाजिक संरचना, लैंगिक अध्ययन तथा ग्रामीण समाज के मुद्दों पर केंद्रित है। वे अनुसंधान के माध्यम से समाज में सकारात्मक परिवर्तन और नीतिगत सुधार हेतु योगदान देने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

© 2026 सुलमा कुमारी, प्रो. डॉ. राणा सुनील कुमार सिंह. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/